ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०५
दिनांक– शुक्रवार, 15 जनवरी, 2021

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 23.3 एवं 12.5 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 88 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 58 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.2 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.3 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाष अवधि औसतन 4.2 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 15.3 एवं दोपहर में 20.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(16–20 जनवरी, 2021)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 16–20 जनवरी, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–
- उत्तर बिहार के जिलों में अगले २–३ दिनों तक कोल्ड–डे (Cold Day) एवं शीतलहर की स्थिति बनी रहेगी। इस दौरान सुबह में मध्यम से घना कुहासा छा सकता है। २–३ दिनों के बाद तापमान में बढ़ोत्तरी होने की सम्भावना है।
- पूर्वानुमानित की अवधि अधिकतम तापमान 16 से 18 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 6 से 8 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 6 से 8 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से 16–17 जनवरी में पछिया हवा तथा अन्य दिनों में पूरवा हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- खड़ी फसलों में नमी बनाये रखने के लिए खेतों में हल्की सिचाईं करें जिससे कम तापमान का फसलों पर कुप्रभाव से बचाया जा सके।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगराणी करे। इस कीट के मैगट सर्वप्रथम अरहर के पौधे के तने में छेद करके उसे खाते है। जिससें पौधे के तने एवं शाखाये सुखने लगती है। बाद में दाना आने पर बीजों को खाते है। जिस स्थानों पर मैगट खातें है, वहॉ कवक एवं जीवाणु उत्पन हो जाते है। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नही रह जाते है और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- समय से बोयी गई गेहूँ की 40 से 50 दिनों की फसल जो कल्ले निकलने की अवस्था में है, उसमें दूसरी सिंचाई करें। अगात बोई गई गेहूँ की फसल जो 60 से 65 दिनों की हो गई है, उसमें तीसरी सिंचाई करें।
- पिछात गेहूँ में दीमक कीट का प्रकोप दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर शाम के समय खेत में छिड़काव कर सिंचाई करें। बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की 21 से 25 दिनों की फसल में सिंचाई कर 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें।
- विलम्ब से बोयी गई गेहूँ की फसल जो 30 से 35 दिनों की हो गई हो, उसमें सिंचाई के बाद चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों (बथुआ) की अधिकता होने पर 2,4–डी0 सोडियम लवण प्रति हेक्टेयर 1 किलोग्राम तथा संकरी पत्ती वाले खरपतवार जैसे– वन गेहूँ एवं जंगली जई से आक्रान्त फसल वाले खेत में क्लोडिनोंफॉप (टॉपीक या झटका) 60 ग्राम सक्रिय तत्व 400 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- चने की फसल में सूंडी कीट की निगरानी करें। यह कीट चने की फलियों में छेद करके अन्दर प्रवेष कर जाती है और दानों को खाकर खोखला कर देती है, जिससे उपज में काफी कमी आती है। यह कीट दिन में भी पौधे में लगी फलियों में आधी घुसी हुई और आधी लटकी हुई देखा जा सकता है। इससे बचाव हेतु खेतो के पास प्रकाष प्रपंच लगाकर प्रौढ़ कीटो को आकर्षित कर तथा नष्ट कर इसकी संतति को कम किया जा सकता है। फिरोमोन प्रपंश / 3–4 प्रपंस प्रति एकड़ की दर से लगायें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पेनोसेड 1 मी0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- पिछात गेहूँ में दीमक कीट का प्रकोप दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर शाम के समय खेत में छिड़काव कर सिंचाई करें। बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की 21 से 25 दिनों की फसल में सिंचाई कर 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें।
- सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। सब्जियों की फसल में कीट एवं रोग–व्याधि से बचाव हेतु नियमित रुप से फसल की देख–रेख करें।
- आलू की फसल की नियमित निरीक्षण करें। अभी इस फसल पर झुलसा रोग का अधिक प्रकोप होने की संभावना है । बचाव के लिए रिडोमिल नामक दवा का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। खेतों में नमी को देखते हुए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। टमाटर, मटर एवं मक्का की फसल में आवष्यकतानुसार सिंचाई करें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित रुप से निगरानी करे। यह सुक्ष्म आकार का कीट पौधो के सभी मुलायम भागो–तने व फलीयों का रस चुसते है। ये कीट मधु–स्त्राव निकालते है, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह–जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाऍं कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सुखने लगते है। फलीयॉ कम लगती है तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।

आज का अधिकतम तापमानः 11.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 10.6 डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः 6.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.4 डिग्री कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी